विश्व हिन्दी परिषद

आयोजन सहयोगी

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित

हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन

14 सितम्बर 2016, बुधवार अपराह्न 3 बजे

अतिथिगण

अध्यक्षता
डॉ. मुरली मनोहर जोशी
माननीय सांसद एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री,
भारत सरकार

उद्घाटनकर्ता
श्री अनंत कुमार
माननीय केंद्रीय मंत्री,
रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार

मुख्य अतिथि
श्री किरेन रिजीजू
माननीय गृह राज्य मंत्री,
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

मुख्य अतिथि
श्री अश्विनी कु.चौबे
माननीय सांसद एवं पूर्व मंत्री बिहार

मुख्य अतिथि
डॉ. अरुण कुमार
माननीय सांसद-जहानाबाद

सम्मानार्थ व्यक्तित्व

डॉ. रामशरण गौड़
प्रख्यात साहित्यकार
अध्यक्ष, दिल्ली पब्लिक लाईब्रेरी

डॉ. बिमल छाजेड़
प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ
अध्यक्ष, साओल

शिवा प्रसाद मोहंती
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
हिन्दुस्तान इन्सेक्टिसाइड्स लिमिटेड

डॉ. आशुतोष कर्नाटक
निदेशक
गेल इंडिया लिमिटेड

जी. जवाहर
महाप्रबंधक
पावर फाईनेंस कॉरपोरेशन

आयोजन सहयोगी
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग

विश्व हिन्दी परिषद
हिंदी बढ़े... हिन्दुस्तान बढ़े
नई दिल्ली

9015 257 258

म.स. 281, मैदानगढ़ी एक्सटेंशन, छत्तरपुर, नई दिल्ली–110074, फोन: 011–41021455, 9835294766
ई–मेल : mail.hindiparishad@gmail.com, वेबसाईट: www.vishwahindiparishad.org

"इतिहास गवाह है जिस समाज व राष्ट्र ने अपनी भाषा में काम किया है, उसी समाज व राष्ट्र की उन्नति हुई है।"

डॉ. बिपिन कुमार, महासचिव, विश्व हिन्दी परिषद

"राष्ट्रनायक माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देते हुए डॉ. बिपिन कुमार ने कहा कि, जब हमारे प्रधानमंत्री विदेशी सरजमीं पर हिन्दी में अपना भाषण देते हैं, तो सवा सौ करोड़ देशवासियों का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है, लोगों को एहसास होता है कि जब हमारे प्रधानमंत्री विदेशों में अपनी मातृभाषा में बात कर सकते हैं तो हम अपने देश में हिन्दी में क्यों नहीं बात करते हैं।"

वक्ता के तौर पर विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार ने उपस्थित लोगों के प्रति विशेष रूप से आभार जताते हुए कहा कि उनके सहयोग व शुभकामना के कारण ही आज हिन्दी दिवस का कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हो पाया। उन्होंने आगे कहा कि समय और परिस्थितियाँ बदल रही हैं, बदलते परिवेश में लोगों की सोच भी बदल रही है। राष्ट्रनायक माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को धन्यवाद देते हुए डॉ. बिपिन कुमार ने कहा कि, जब हमारे प्रधानमंत्री विदेशी सरजमीं पर हिन्दी में अपना भाषण देते हैं, तो सवा सौ करोड़ देशवासियों का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है, लोगों को एहसास होता है कि जब हमारे प्रधानमंत्री विदेशों में अपनी भाषा में बात कर सकते हैं तो हम अपने देश में हिन्दी में क्यों नहीं बात करते हैं।

इतिहास गवाह है कि जो समाज व राष्ट्र ने अपनी भाषा में काम किया है, उसी समाज व राष्ट्र की उन्नति हुई है। उदाहरण देते हुए डॉ. विपिन ने चीन, जापान, जर्मनी, इजराइल इत्यादि राष्ट्रों का नाम इंगित किया।

उन्होंने कहा कि भाषा व संस्कृति के स्तर पर कई बार वैचारिक व सांस्कृतिक हमले हम पर हुए, लेकिन हमारे नैतिक मूल्यों, परम्पराओं व संस्कृति की जड़ें इतनी गहरी हैं, कि लाख कोशिश के बाद भी वो अपने मकसद में सफल नहीं हो पाए।

अंत में उन्होंने उपस्थित जनसमूह का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह आपको हिन्दी के प्रति प्यार का प्रतिफल है कि इतनी संख्या में लोग यहां खड़े हैं तथा इस अवसर पर उन्होंने कहा कि आज का दिन हिन्दी दिवस समारोह के रूप में राष्ट्रीय उत्सव मनाने का दिन है।

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न

दिनांक 14 सितम्बर 2016, बुधबार को विश्व हिन्दी परिषद द्वारा कन्स्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली के प्रांगण में हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ सांसद एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री माननीय डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने किया।

उद्घाटनकर्ता के रूप में केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू ने कार्यक्रम को सुशोभित किया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित सांसद श्री अश्विनी कुमार चौबे, माननीय सांसद–बक्सर, एवं श्री अरूण कुमार, माननीय सांसद–जहानाबाद, ने कार्यक्रम को सुशोभित किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं मुख्य वक्ता के तौर पर दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के अध्यक्ष डॉ. रामशरण गौड़ थे। कार्यक्रम में वक्ता के तौर पर उपस्थित विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन कुमार ने कार्यक्रम की शुरूआत स्वागत भाषण से की। डॉ. मंजू राय, प्राध्यापक ''केन्द्रीय हिन्दी संस्थान'', भारत सरकार द्वारा सफलतापूर्वक मंच संचालन किया गया। इस अवसर पर सभागार में सैकडों की संख्या में गणमान्य लोगों के साथ बड़ी संख्या में पत्रकारों ने कार्यक्रम में भाग लेकर हिन्दी दिवस समारोह को सफल बनाया।

डॉ. मुरली मनोहर जोशी जी का अध्यक्षीय भाषण

"हिन्दी भारत को जोड़ती है, संस्कृत ब्रह्माण्ड को जोड़ती है। हिन्दी हमें हृदय से जोड़ती है वहीं संस्कृत अध्यात्म की भाषा है।"

"देश की आम जनता, शिक्षाविदों, समाज के सभी वर्गों, राजनेताओं और अधिकारियों को हिन्दी को सशक्त और संबर्द्धित करने के लिए संविधान के अधिनियमों में संशोधन के लिए एकजुट होकर आगे आना होगा, तभी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बंद हो सकेगा। इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत है।"

विश्व हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस के सुअवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में पूर्व केन्द्रीय मंत्री व सांसद माननीय डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने कहा कि मातृभाषा हिन्दी को संविधान में जो स्थान मिलना चाहिए, अभी तक नहीं मिल पाया है। अपने वक्तव्य में माननीय डॉ. जोशी ने कहा कि देश की तीन चौथाई लोगों की भाषा हिन्दी है। पूर्वोत्तर भारत की भी संपर्क भाषा हिन्दी है। देश की आम जनता, शिक्षाविद्, समाज के सभी वर्गों, राजनेताओं और अधिकारियों को हिन्दी को सशक्त और संबर्द्धित करने के लिए संविधान के अधिनियमों में संशोधन के लिए एकजुट होकर आगे आना होगा, तभी अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बंद हो सकेगा। इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की जरूरत है।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि जापान, रूस, चीन, इजराइल, जर्मनी के शोधपत्र अपनी भाषा में ही प्रकाशित होती है, तो हमारे देश में शोधपत्र हिन्दी में क्यों नहीं प्रकाशित हो सकती। उन्होंने कहा कि बच्चों को कॉन्वेन्ट में अंग्रेजी की कविता–'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' तो सिखा दिया जाता है, लेकिन हमारे बच्चों को रामचरित मानस के दोहे से वंचित रखा जाता है। उन्होने कहा कि मातृभाषा हिन्दी का सम्मान करना चाहते है, तो इसकी शुरूआत घर से कीजिए। गुड मार्निंग की जगह सुप्रभात बोलिए, मम्मी की जगह मां और डैडी की जगह पिताजी बोलना शुरू कीजिए।

उन्होंने कहा कि बदलते समय में काफी कुछ बदल रहा है, शब्दावली भी बदल रही है। बदलाव में जो मौलिक रूप से लाभकारी है, उसे स्वीकार करना होगा। हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्यकरण की तरफ तेजी से बढ़ रही है। भाषा, वेश–भूषा, खान–पान के साथ तहजीब बदल रहा है। संस्कृत मनुष्य को इंसान बनाती है, वहीं हिन्दी हमें संवेदनशील बनाती है।

उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए डॉ. जोशी ने कहा कि एक दिन हिन्दी दिवस मनाने से नहीं, बल्कि रोजाना का काम हिन्दी में शुरू कीजिए। हिन्दी काफी सशक्त एवं समृद्ध भाषा है। हिन्दी भारत को जोड़ती है, वहीं संस्कृत ब्रह्माण्ड को जोड़ती है। हिन्दी हृदय की भाषा है तो संस्कृत अध्यात्म की भाषा है।

"विश्व हिन्दी परिषद का प्रयास अत्यन्त सराहनीय"

श्री किरेन रिजीजू, मा. गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार

"हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है, लेकिन मेरे लिए हिन्दी मातृभाषा है। हिन्दी को उन्नत करने के लिए विकल्प नही बल्कि संकल्प की जरूरत है।"

"देश को एक सूत्र में बांधने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है।"

उद्घाटनकर्ता के रूप में विश्व हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री श्री किरेन रिजीजू ने कहा कि विश्व हिन्दी परिषद का प्रयास अत्यंत सराहनीय है, समारोह में उपस्थित होकर मैं काफी खुश हूँ। बतौर सामाजिक संगठन विश्व हिन्दी परिषद द्वारा हिन्दी दिवस का मनाया जाना बहुत बड़ी बात है। यहाँ मनाये जाने के भाव में समर्पण व निष्ठा है।

उन्होंने कहा कि जब देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी हिन्दी की बात करते हैं तो ओछी मानसिकता वाले कुछ लोगों द्वारा इसका विरोध किया जाता है और कहा जाता है कि हिन्दी भाषा को थोपा जा रहा है। उनके द्वारा विवाद का रूप खड़ा किया जाता है। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा समय–समय पर केन्द्र और राज्य सरकारों को राजभाषा अधिनियमों को अनुपालित करने का निर्देश दिया जाता है। लेकिन आश्चर्य की बात है 'क' श्रेणी के राज्यों के लोग अंग्रेजी को प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने पूर्वोत्तर भारत की चर्चा करते हुए कहा है कि हमारे यहाँ कोई अंग्रेजी में बात करता है तो लोग नाराज होते हैं। भारतीय भाषाओं में हिन्दी आगे बढ़ेगी, तभी हमारा देश आगे बढ़ेगा।

उन्होंने आगे कहा कि देश को एक सूत्र में बाँधने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। हिन्दी को राजभाषा कहा जाता है, लेकिन मेरे लिए हिन्दी मातृभाषा है। हिन्दी को उन्नत करने के लिए विकल्प नही बल्कि संकल्प की जरूरत है।

"उच्च न्यायालयों व सर्वोच्च न्यायालय में गरीबों को हिन्दी में न्याय मिले, मेरी यही कामना है।"

श्री अश्विनी कुमार चौबे, माननीय सांसद–बक्सर

"महात्मा गांधी की पहल पर जनमानस की भाषा हिन्दी को मातृभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। स्वामी विवेकानंद जी का जिक्र करते हुए माननीय सांसद अश्विनी कुमार चौबे जी ने कहा कि स्वामी जी हिन्दी को स्वाभिमान की भाषा कहा करते थे।"

माननीय सांसद श्री अश्विनी कुमार चौबे जी ने विश्व हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन में कहा कि बहुत खुशी कि बात है कि अब हिन्दी दिवस विदेशों में भी मनाया जा रहा है। महात्मा गांधी की पहल पर जनमानस की भाषा हिन्दी को मातृभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। स्वामी विवेकानंद जी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि स्वामी जी हिन्दी को स्वाभिमान की भाषा कहा करते थे। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि पहले गोरे अंग्रेजों ने अब काले अंग्रेज से अपनी मातृभाषा की अस्मिता ख़तरे में है। उन्होंने कहा कि हिन्दी जनमानस की भाषा है, हमें एकजुट करती है, वहीं अंग्रेजी मानसिक गुलामी का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि शुरूआत घर–घर से हो तो आंदोलन का रूप लेगा। इसके लिए संकल्प लेने की आवश्यकता है। उच्च न्यायालयों व सर्वोच्च न्यायालय में गरीबों को हिन्दी में न्याय मिले, मेरी यही कामना है। उन्होंने उपस्थित जनसमूह को मुखातिब होकर कहा कि इसके लिए समाज के सभी वर्गों को मिलकर एकजुट होकर प्रयास करना होगा।

"हिन्दी हमारी राष्ट्रीय अखंडता का प्रतीक है"

डॉ.अरूणकुमार,मा. सांसद-जहानाबाद

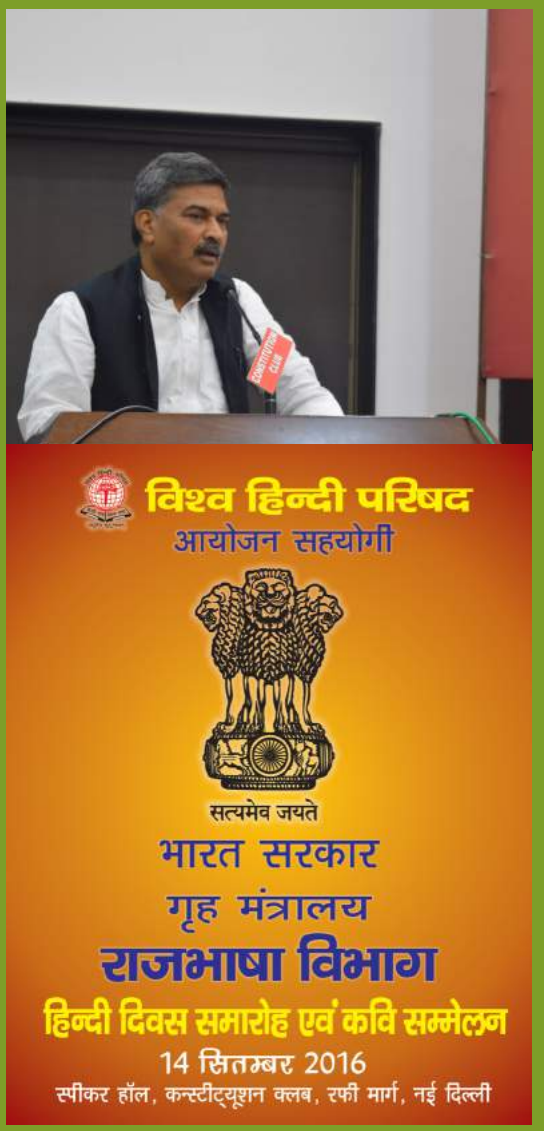

"हिन्दी में लगभग सभी धर्मों व भाषाओं का समागम है। हिन्दी सभी क्षेत्रीय भाषा का पूरक है।"

हिन्दी हमारी राष्ट्रीय अखंडता का प्रतीक हैं। भारत के सभी क्षेत्रों के लोग हिन्दी को बखूबी समझते व जानते हैं। हिन्दी में लगभग सभी धर्मों व भाषाओं का समागम है। हिन्दी सभी क्षेत्रीय भाषा का पूरक है। हिन्दी को लेकर समाज में कहीं कोई विवाद नहीं हैं, वहीं यह केवल राजनैतिक लोगों द्वारा अपने हित में फैलाया गया राजनैतिक भ्रम मात्र है। राष्ट्रधर्मी लोगों द्वारा हिन्दी को मान सम्मान दिलाने कि दिशा में शुरू से कार्य किया जाता रहा है। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में फिल्म जगत का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने विश्व हिन्दी परिषद के महासचिव डॉ. बिपिन के वक्तव्य का समर्थन करते हुए कहा कि हमारी सांस्कृतिक विरासत काफी मजबूत रही है और इसका श्रेय शिक्षकों को जाता है। शिक्षक नैतिक मूल्यों व संस्कृति का निर्माण करते हैं। शिक्षक राष्ट्र निर्माता हैं, और आज इस सृजनकर्ता से बाबू का काम लिया जा रहा है। मशीन निर्माण करवाया जा रहा है। समाज में शिक्षकों को सम्मान देने की जरूरत पर माननीय सांसद डॉ. अरूण कुमार ने बल दिया ताकि शिक्षक उस सम्मान को पाकर अपने अवगुणों को दूर कर राष्ट्र निर्माण में अपनी महती भूमिका निभा सके।

"हिन्दी को समस्त भारतीय वाङ्मय की भाषा बनाया जाय"

–डॉ. रामशरण गौड़, अध्यक्ष, दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी

"भारत में हिन्दी को जनसंपर्क भाषा के रूप में प्रचारित और प्रसारित करने में बहुत बड़ा हाथ हिन्दी फिल्मों और संचार माध्यमों–हिन्दी के समाचार पत्रों, हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं एवं दूरदर्शन का है।"

डॉ. रामशरण गौड़ जी ने अपने भाषण में कहा कि आज हिन्दी समस्त भारत के दूर–दराज के क्षेत्रों तक पहुंच गयी है। चाहे भारत का कश्मीर राज्य हो या पूर्वोत्तर का असम, नागालैंड, मनिपुर, त्रिपुरा, अरूणाचल राज्य। पूर्वोत्तर में सभी राज्यों में हिन्दी पढ़ी और समझी जाती है। हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी के प्रसारित होने का बहुत बड़ा कारण हमारे वे तीर्थस्थल और पवित्र नदियां और पहाड़–पर्वत हैं जो हमारे पूर्वज, ऋषि–मुनियों के जीवन–दर्शन और चिंतन का सुपरिणाम है। और अब भारत वासियों में पयर्टन की बढ़ती प्रवृत्ति ने हिन्दी के प्रयोग में अधिक वृद्धि की है।

भारत में हिन्दी को जनसंपर्क भाषा के रूप में प्रचारित और प्रसारित करने में बहुत बड़ा हाथ हिन्दी फिल्मों और संचार माध्यमों–हिन्दी के समाचार पत्रों, हिन्दी की पत्र–पत्रिकाओं एवं दूरदर्शन का है। संचार माध्यमों के कारण हिन्दी बहुत फल–फूल रही है।

भारत में हिन्दी दिवस विगत 65 वर्ष से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। हिन्दी दिवस के अवसर पर भारत सरकार के प्रत्येक कार्यालय, उपक्रमों एवं प्रतिष्ठानों में बड़े–बड़े बैनर लगाए जाते हैं। कर्मचारियों, अधिकारियों की भाषण, निबंध लेखन, सुलेख टिप्पण एवं प्रारूप लेखन प्रतियोगिताएं होती हैं, और पुरस्कार भी दिए जाते हैं। हिन्दी के विद्वानों और साहित्यकारों को बुलाकार सम्मानित किया जाता है।

हिन्दी भाषा में भारतीय वाङ्मय के भूगोल, इतिहास, समाजशास्त्र, विज्ञान, राजनीति विज्ञान, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, चिकित्सा आदि विषयों का लेखन नहीं हो पा रहा है। हमें हिन्दी को भारतीय वाङ्मय की भाषा बनाना होगा तभी हम हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर पायेंगे।

सोशल मीडिया पर छाया रहा विश्व हिन्दी परिषद का कार्यक्रम

हिंदी दिवस की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में आइए हम सब हिन्दी भाषा के संरक्षण के प्रति जागरूकता प्रचारित करने का प्रण लें।

विश्व हिन्दी दिवस पर सम्पूर्ण भारतवर्ष को ढेरों बधाई....

आज 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर नई दिल्ली स्थित स्पीकर भवन सभागार, कांस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग में विश्व हिन्दी परिशद की तरफ से एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।
हिन्दी दिवस समारोह एवं कवि सम्मेलन में मुझे भी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अपने संबोधन में मैंने अपना उद्गार रखते हुए कहा कि हिन्दी देश को जोड़ने वाली भाषा है। यह विश्व के सबसे विशाल लोकतंत्र के 100 करोड़ लोगों की आत्मा की भाषा है। संपूर्ण भारत के लोग भले हिन्दी लिख बोल न पा रहे हों पर हिन्दी समझता पूरा देश है। क्योंकि अपने विशाल भंडार को सहेजने वाली हिन्दी का समावेश हर भाषा में है।
आइये हम सब मिल कर अपने समृद्ध इतिहार, बुलंद वर्तमान वाली अपनी गौरवशाली हिन्दी को एक दिवस मात्र नहीं हर पल जीयें। हिन्दी लिखें हिन्दी पढ़ें हिन्दी में बोलें बातियाये और अपनी हिन्दी को पूरे विश्व का सिरमौर बनाये। हिन्दी हिंदुस्तान की भाषा है हर आमोखास की भाषा है।
अश्विनी कुमार चौबे
सांसद–बक्सर, बिहार

हिन्दी दिवस 14 सितम्बर को हर साल पूरे देश में मनाया जाता है जिसमें हिन्दी के प्रोत्साहन हेतु कार्यक्रम होते हैं। इस अवसर पर विश्व हिन्दी परिषद ने राजभाषा, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से कंस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में हिन्दी दिवस का सफल आयोजन किया। इस कार्यक्रम में मुझे मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होने का अवसर मिला।

विश्व हिन्दी दिवस : 2016

हिन्दी दिवस समारोह : 2016